इलाहाबाद मंडल : एक ऐतिहासिक परिदृश्य

ईस्ट इंडियन रेलवे के स्थापना हेतु 17.08.1849 को संविदा निष्पादित की गई। कलकत्ता एवं दिल्ली के बीच कलकत्ता से पहला 120 मील का थ्रू लाइन ट्रैक चालू करने में 06 वर्ष का कठिन परिश्रम लगा। लार्ड डलहौजी के समय में 04.02.1855 को हावड़ा स्टेशन से पहली रेल गाड़ी चालू हुई जो 56 गेज के नए ट्रैक पर रानीगंज के कोल फिल्ड तक 125 मील तक चली । 1857 में स्वतंत्रता आंदोलन छिड़ने के कारण आगे रेलवे लाइन के निर्माण कार्य में रूकावट आई । 27.11.1857 को पुन: कार्य शुरू हआ और अगस्त 1858 में लाइन को कानपुर तक चालू किया गया । भारत के तत्कालीन वायसराय एंड गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग के समय में ईस्ट इंडियन रेलवे 03.03.1859 को इलाहाबाद से कानपुर तक पहली रेल गाड़ी चलाने में सफल हुई । कानपुर शहर को रेल लाइन द्वारा लखनऊ के साथ 1875 में और झांसी के साथ 1886 में जोड़ा गया । अप्रैल 1879 में बुढ़वल-कानपुर मीटर गेज लिंक का निर्माण पूरा हुआ और 1909 में बी.बी.सी.आई. कानपुर तक पहुंची और इस प्रकार वर्तमान इलाहाबाद मंडल उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम मार्गों पर एक महत्वपूर्ण लिंक के रूप में स्थापित हुआ । आज इलाहाबाद मंडल भारतीय रेलवे की रीढ़ है । जो कि पूर्वी क्षेत्र के कोयला-स्टील बेल्ट को उपभोक्ता क्षेंत्रों से जोड़ता है । कुल 1070 रूट कि.मी. लंबी रेल लाइन के साथ इलाहाबा मंडल उत्तर प्रदेश के दक्षिणी भाग के 21 जिलों में फैला हुआ है ।

इलाहाबाद मंडल-एक दृष्टि में

रूट- मेन लाइन ब्रांच लाइन	757.12 कि.मी. 296.49 कि.मी.
ट्रैक रूट लंबाई	1053.61 कि.मी.
कुल ट्रैक कि.मी.	1944.39 कि.मी.
प्रतिवर्ष वहन किया गया यातायात	
चार्टेड क्षमता प्रत्येक मार्ग से (मेंटीनेंस ब्लाक्स सहित)	73 मार्ग पूर्णतया प्रयुक्त
क्षमता उपयोग (चार्टेड क्षमता के% के रूप)	130% से 150%
प्रतिदिन मेल/एक्स/पैसेंजर गाड़ियों की औसत संख्या	310
प्रतिदिन अंतपरिवर्तित माल गाड़ियों की औसत संख्या	240.6

स्टेशनों की संख्या	133 ए-1- 2 ए- 6 बी- 4 डी- 22 ई- 78 एफ- 21
यात्रियों को प्रतिदिन बेचे जाने वाले टिकटों की औसत संख्या	2.29 लाख
कुल कर्मचारी	30455
कुल अधिकारी	166

<u>इलाहाबाद मंडल में पर्यटन एवं तीर्थ स्थल</u>

1	इलाहाबाद शहर	संगम, आनंद भवन, स्वराज भवन, चंद्रशेखर आजाद पार्क, किला, अक्षयवट, हनुमान मंदिर एवं सरस्वती घाट मुख्य आकर्षण हैं । इसके अलावा इलाहाबाद मुख्य रूप से महाकुंभ के लिए प्रसिद्ध है जो कि प्रत्येक 12 वर्ष पर आयोजित होता है और कुंभ के दौरान करोड़ों श्रद्धालु इस शहर में आते हैं ।
2	कल्यानी देवी मंदिर	यह 100 वर्ष पुराना धार्मिक महत्व का मंदिर है
3	श्रृंगवेरपुर	यह इलाहाबाद से लखनऊ की ओर 40 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है । इसकी प्रसिद्धि इसलिए है क्योंकि सीता एवं लक्ष्मण सहित भगवान राम यहां ठहरे थे।
4	कौशांबी	यह इलाहाबाद से 25 कि.मी. पर अवस्थित और गौतम बुद्ध के काल से संबंधित बहुत बड़े पूरातात्विक महत्व का स्थल है ।
5	अलीगढ़	यह पश्चिमी उत्तर प्रदेश का पुराना शहर है जो कि उच्च शिक्षा के लिए और यहां के ताला उद्योग के लिए प्रसिद्ध ।

6	कानपुर	क्षेत्रफल के हिसाब से यह भारत का पांचवा सबसे बड़ा शहर और जनसंख्या की दृष्टि से सातवॉ सबसे शहर है । इस स्टेशन से प्रतिदिन 60 से 75 लाख यात्री आते-जाते हैं । यह चमड़े, सूती और आयुध आधारित उद्योगों के लिए प्रसिद्ध है ।
7	जे.के.मंदिर	कानपुर शहर के मध्य में स्थित यह उत्कृष्ट कला का नमूना और सौदर्यपरक ढंग से निर्मित मंदिर है ।
8	बिठूर	कानपुर से 25 कि.मी.की दूरी पर गंगा किनारे स्थित अत्यंत धार्मिक महत्व का स्थल है जहां पर रामायण की रचना हुई थी ।
9	मिर्जापुर	यह शहर कालीन उद्योग के लिए प्रसिद्ध है ।
10	विंध्याचल	यहां पर मॉ विंध्यवासिनी का प्रसिद्ध मंदिर अवस्थित है जिसे नवरात्रि महोत्सव के दौरान रोशनी से सजाया जाता है। नवरात्रि में यहां श्रृद्धालुओं की बहुत बड़ी भीड़ इकटठा होती है ।
11	चुनार	यह अपने प्राकृतिक सौंदर्य, जलप्रपातों और राजा विक्रमादित्य द्वारा बनवाए गए पुराने किले के लिए प्रसिद्ध है ।
12	फिरोजाबाद	कानपुर दिल्ली लाइन पर टूण्डला के नजदीक स्थित यह शहर चूडियों और शीशा उद्योग के लिए प्रसिद्ध है ।
13	हाथरस	स्वतंत्रता अन्दोलन में योगदान के लिए प्रसिद्ध एक ऐतिहासिक शहर है।